क. बाइबल के द्वारा बाइबल की व्याख्या करना

- बाइबल स्वयं अपनी सबसे अच्छी व्याख्याकार है।
  - *अपने ही पाठ में व्याख्यायित:* उदाहरण के लिए, दानिय्येल अपने दर्शन का अर्थ यह बताते हुए समझाता है कि उसने जिन पशुओं को देखा, वे राज्य हैं (दानिय्येल 7:3, 17)
  - *किसी दूसरे भविष्यद्वक्ता द्वारा व्याख्या:* एज्रा ने यिर्मयाह की भविष्यवाणी के 70 वर्षों का अर्थ समझाया (यिर्मयाह 25:11-12; 2 इतिहास 36:22-23)
  - *नया नियम पुराने नियम की व्याख्या करता है:* मत्ती ने यीशु के जन्म को यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में समझाया (यशायाह 7:14; मत्ती 1:22-23)
- यीशु ने न केवल पुराने नियम की व्याख्या की, बल्कि उसके शाब्दिक अर्थ से आगे बढ़कर उसका सही अर्थ भी बताया।

ख. ऐतिहासिक संदर्भ

- क्या नई पृथ्वी पर बच्चे मरेंगे और पापी होंगे? (यशायाह 65:17-20)
- नए नियम की प्रलय संबंधी भविष्यवाणियों के प्रकाश में यशायाह की भविष्यवाणी की व्याख्या करने पर, वह न केवल चौंकानेवाली लगती है, बल्कि विरोधाभासी भी प्रतीत होती है (प्रकाशितवाक्य 21:1-4)।
- हमें समझना चाहिए कि यशायाह के समय का ऐतिहासिक संदर्भ एक बात है और प्रकाशितवाक्य का ऐतिहासिक संदर्भ दूसरी बात है। यशायाह ने इस्राएल के भविष्य के बारे में बात की थी, जब वह मसीहा को स्वीकार करता। लेकिन यूहन्ना के समय तक इस्राएल मसीहा को अस्वीकार कर चुका था। संदर्भ बदल चुका था।
- यदि इस्राएल ने मसीहा को स्वीकार कर लिया होता, तो एक बड़ा परिवर्तन होता: पृथ्वी और मानवता का छुटकारा और परिवर्तन धीरे-धीरे आरंभ हो जाता। पवित्र लोग वृक्षों के समान लंबे समय तक जीवित रहते (यशायाह 65:22), और पवित्र भूमि में पशु कम आक्रामक होते (यशायाह 65:25)।
- फिर अंत में, मृतक जीवित हो उठते और मृत्यु का अस्तित्व समाप्त हो जाता (यशायाह 26:19; 25:8)। यशायाह की भविष्यवाणियों का केवल यही अंतिम भाग शाब्दिक रूप से पूरा होगा, क्योंकि यह इस्राएल के निर्णय पर निर्भर नहीं करता।

ग. सांस्कृतिक संदर्भ

- रोमी साम्राज्य में, आज की तरह ही कई स्थानों पर, एक-दूसरे के गाल पर चूमकर अभिवादन करना आम बात थी। उस सांस्कृतिक संदर्भ में पौलुस की सलाह उचित थी (1 कुरिन्थियों 16:20)।
- हालाँकि, उदाहरण के लिए, जापानी संस्कृति में सार्वजनिक रूप से शारीरिक संपर्क से सामान्यतः बचा जाता है, इसलिए ऐसा करने से अधिकतर लोगों को आश्चर्य, अजीबपन या असहजता महसूस होती है।
- इस बात को ध्यान में रखते हुए कि उस सांस्कृतिक संदर्भ में पौलुस की सलाह मानने से लोग इसे अस्वीकार कर सकते हैं, हमें उसकी सलाह के मूल भाव को समझकर उसे उस संस्कृति के अनुसार अपनाना चाहिए।
- चाहे हम जापान में हों या संसार के किसी अन्य स्थान पर (थाईलैंड, तिब्बत, न्यूज़ीलैंड), आइए हम एक-दूसरे का अभिवादन वहाँ की संस्कृति के अनुसार उचित तरीके से करें, ताकि हमारा भाईचारे का प्रेम प्रकट हो।

घ. साहित्यिक संदर्भ

- एक प्रसिद्ध कहावत है, "संदर्भ के बिना कोई पाठ गलत अर्थ निकालने का बहाना है।" दूसरे शब्दों में, किसी पाठ का अलग से उपयोग करने से ऐसी व्यक्तिगत व्याख्या हो सकती है, जो हमारी अपनी रुचियों के अनुकूल हो और सामान्यतः बाइबल की सही शिक्षा से बहुत दूर हो।
- बाइबल के किसी पाठ का संदर्भ क्या होता है?
  - तात्कालिक संदर्भ में उस पाठ से पहले और बाद के पद्य शामिल होते हैं।
  - व्यापक संदर्भ वह अध्याय है जिसमें वह पाठ पाया जाता है।
  - हम उस पूरी पुस्तक पर विचार करके संदर्भ को और विस्तृत कर सकते हैं, जिसमें वह पाठ दिया गया है।
- भजन संहिता 91:11-12 बाहरी खतरों से परमेश्वर की सुरक्षा के बारे में बताता है। इस पाठ को उसके संदर्भ से अलग करके और अधूरा उद्धृत करके, शैतान ने इसी पाठ को बहाना बनाकर यीशु को जानबूझकर स्वयं को खतरे में डालने के लिए उकसाने का प्रयास किया (मत्ती 4:6)।

ङ. पाठ का अर्थ समझना

- सभी मसीही लोगों को बाइबल को स्वयं समझना चाहिए। बाइबल इतनी स्पष्ट है कि सभी लोग उद्धार के मार्ग को समझ सकते हैं, फिर भी वह इतनी गहन है कि सबसे बुद्धिमान लोगों को भी निरंतर चुनौती देती रहती है। पवित्रशास्त्र उद्धार देनेवाले ज्ञान का एक ऐसा असीम खजाना है, जिसे पूरी तरह कभी समाप्त नहीं किया जा सकता।
- लेकिन बाइबल के पाठ की प्रत्येक सही व्याख्या को कुछ नियमों का पालन करना चाहिए:
  - हमें पाठ के शब्दों को समझना चाहिए (यदि संभव हो, तो मूल भाषाओं या विभिन्न अनुवादों का उपयोग करके)।
  - हमें पाठ के सभी संदर्भों (ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक) का सम्मान करना चाहिए।
  - हमें समानांतर अंशों (जैसे सुसमाचारों) या उसी विषय से संबंधित अंशों की तुलना करनी चाहिए।
  - अंतिम व्याख्या बाइबल की बाकी शिक्षाओं के अनुरूप होनी चाहिए।

च. विषयगत बाइबल अध्ययन

- एक मसीही के लिए बाइबल का अध्ययन करना वैकल्पिक नहीं है। हमें हमेशा परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान में बढ़ते रहना चाहिए और उसके वचन का अध्ययन करते समय पवित्र आत्मा को अपना मार्गदर्शन करने देना चाहिए (यूहन्ना 16:13)।
- इसके अलावा, हमें "जब कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहना चाहिए, पर नम्रता और भय के साथ" (1 पतरस 3:15)।
- विषय के अनुसार बाइबल का अध्ययन करने से हम दूसरों के सामने संदेश प्रस्तुत करने के लिए तैयार होंगे, चाहे हम बाइबल का अध्ययन कराएँ या वचन का प्रचार करें।
- सीखने के लिए हमें दूसरे लोगों के बाइबल संबंधी ज्ञान का लाभ उठाने हेतु विनम्र दृष्टिकोण बनाए रखना भी आवश्यक है।
- यद्यपि हम पूरी चर्चा की विषयवस्तु नहीं जानते, फिर भी हम जानते हैं कि यीशु ने बाइबल के विभिन्न अंशों के आधार पर दो लोगों को अपने मसीहाई कार्य के बारे में बाइबल का अध्ययन कराया था (लूका 24:25-27)।

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट के लेखों की व्याख्या करना

एलेन जी. व्हाइट के लेखों का अध्ययन करते समय, हमें उन्हीं दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए, जिनका पालन हम बाइबल के लेखों का अध्ययन करते समय करते हैं।

"साइकिलों, कपड़ों और अन्य अनावश्यक वस्तुओं पर खर्च किए गए धन का हिसाब देना होगा।" ("सेवकों के लिए गवाहियाँ" पृष्ठ 398) जैसे कथनों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में समझा जाना चाहिए (1890 में एक साइकिल की कीमत कई महीनों के वेतन के बराबर थी)।

एलेन जी. व्हाइट के लेखों के साहित्यिक संदर्भ से अलग करके कुछ अनुच्छेदों का उपयोग करने से ऐसा लगता है कि वह ऐसी बातें कह रही हैं, जिन्हें कहने का उनका कभी इरादा नहीं था, या वह ऐसे सैद्धांतिक दृष्टिकोण का समर्थन कर रही हैं, जो उनकी मान्यताओं और शिक्षाओं के विपरीत है।

किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले, हमें किसी विशेष विषय पर उनकी सभी शिक्षाओं का अध्ययन करना चाहिए, न कि केवल कुछ उद्धरणों पर निर्भर रहना चाहिए।

दूसरी ओर, हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए: क्या उन्होंने वास्तव में वही लिखा था, जो मुझे बताया जा रहा है? हमेशा यह जाँच लें कि उद्धरण वास्तविक और सही है (इसके लिए आधिकारिक वेबसाइट https://egwwritings.org/ का उपयोग करें)।.